उत्तर (Set-3)

खंड–क

1. (क) आत्मनिर्भरता का अर्थ है–अपने पर निर्भर रहना, किसी भी कार्य के लिए दूसरों का मुँह न ताकना। राष्ट्रीय स्तर पर इसका महत्त्व और भी अधिक बढ़ जाता है। अपनी, समाज की तथा राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करना राष्ट्रीय स्तर पर आत्मनिर्भरता का अर्थ है। ऐसा करने से सभी में आत्मविश्वास की भावना जागती है।

(ख) स्वावलंबन को सफलता की पहली सीढ़ी इसलिए कहा गया है क्योंकि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति का स्वावलंबी होना ज़रूरी है। स्वावलंबी व्यक्ति ही समाज तथा राष्ट्र की सफलता का महामंत्र होता है, समाज की उन्नति का आधार होता है।

(ग) पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं में स्वावलंबन की भावना कूट-कूट कर भरी होती है। पेड़-पौधे सूर्य से प्रकाश, धरती से जल व अन्य खनिज ग्रहण कर सुविकसित होते हैं। पशु-पक्षी भी अपना भोजन स्वयं ढूँढ़ते हैं। चींटी जैसे नन्हे जीव भी स्वावलंबी जीवन जीते हैं।

(घ) शिशु जब अपने हाथों से चीज़ों को उठाते हैं, खाते हैं, खेलने में उनका प्रयोग करते हैं, तो उन्हें स्वावलंबन का आनंद मिलता है।

(ङ) आश्रित × निराश्रित

2. (क) कवि अपनी माँ के प्यार को याद करके प्रसन्न होते हैं। वे याद करते हैं कि उनकी माँ उन्हें बड़े प्यार से खाना खिलाया करती थीं, दुलारती हुई उन्हें गोद में बिठा लेती थीं, हँसते-हँसते उनके नाज़-नखरे उठाया करती थीं और रोने पर उन्हें अपने सीने से लगा लेती थीं।

(ख) बचपन में जब कभी कवि डर जाते थे, तो उनकी माँ उन्हें आँचल में छिपाकर मीठी लोरी सुनाकर उन्हें सुलाया करती थीं। बचपन में अँधेरा देखकर घबरा जाने पर माँ उनके सिर पर हाथ फेरते हुए डर को दूर भगाया करती थीं।

(ग) कवि ने अपने बचपन के अनमोल क्षण अपनी माँ के आँचल की ठंडी छाँव में बिताए थे।

(घ) प्रस्तुत पंक्ति से उनकी माँ का अभिप्राय यह है कि दूध पीकर उनका बेटा शेर के समान बहादुर बन जाएगा। किसी से भयभीत नहीं होगा।

(ङ) दिए गए मुहावरे का अर्थ है–हर तरह की इच्छा यथासंभव पूरी करना।
हर माँ अपनी संतानों के नाज़-नखरे उठाती है।

खंड–ख

3. (क) संयुक्त वाक्य।

(ख) वह खाना बना रही थी और बेटे से बात भी कर रही थी।

(ग) जो विद्यार्थी परिश्रमी होता है, वह अवश्य सफल होता है।

4. (क) कलाकार द्वारा मूर्ति गढ़ी जाती है।

(ख) बच्चों से शांत नहीं रहा जा सकता।

(ग) लड़कों ने स्कूल साफ़ किया।

(घ) कर्मवाच्य।

5. (क) **मर मिटेंगे** – पुल्लिंग, बहुवचन, अकर्मक क्रिया, 'सैनिक' कर्ता की क्रिया।

(ख) **भागकर** – रीतिवाचक क्रिया विशेषण।

(ग) **दसवीं** – कक्षा विशेष्य का विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन, क्रमसूचक।

(घ) **मैं** – उत्तमपुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, वाक्य का कर्ता।

6. (क) जसोदा हरि पालने झुलावै।
हलरावै, दुलराई मल्हावे, जोई सोई कछु गावै।।

(ख) संयोग शृंगार रस। इसके अनुभाव हैं—अवलोकन, स्पर्श आदि।

(ग) काव्य-पंक्तियों में निहित रस है—भयानक रस और इसका स्थायी भाव भय है।

(घ) निर्वेद या वैराग्य शांत रस का स्थायी भाव है। इस रस के आलंबन संसार की असारता, प्रभु-चिंतन आदि हैं।

खंड—ग

7. (क) लेखक ने त्रेपनवें अध्याय की विशेषता की ओर संकेत करते हुए कहा है कि उसमें रुक्मिणी हरण की कथा का वर्णन किया गया है। रुक्मिणी ने एक लंबा-चौड़ा पत्र एकांत में लिखकर, एक ब्राह्मण के हाथ, श्रीकृष्ण को भेजा था। वह पत्र प्राकृत में नहीं लिखा गया था। उस पत्र में रुक्मिणी ने अपना पांडित्य दिखाया है।

(ख) लेखक ने लोगों से प्रार्थना की है कि वे अपने मन से इस काल्पनिक विचार को पूरी तरह से निकाल दें कि पुराने ज़माने में यहाँ की स्त्रियाँ अपढ़ थी अथवा उन्हें पढ़ने की आज्ञा न थी।

(ग) लोगों को प्राचीनकाल की स्त्रियों के पढ़ी-लिखी होने का प्रमाण श्रीमद्भागवत के दशमस्कंध के उत्तरार्द्ध के त्रेपनवें अध्याय में मिलेगा।

8. (क) पहली बार लेखिका के पिताजी का ध्यान उनकी ओर उस समय केंद्रित हुआ, जब उनकी बड़ी बहन सुशीला का विवाह हो गया और दोनों भाई आगे की पढ़ाई के लिए बाहर चले गए। इन लोगों की छत्र-छाया के हटते ही पिताजी ने पहली बार लेखिका को उनके वजूद का एहसास दिलाया। उनका आग्रह था कि वे रसोई घर से दूर रहें। पिताजी रसोई घर को भटियारखाना कहते थे। उनके हिसाब से वहाँ रहना अपनी क्षमता और प्रतिभा को भट्टी में झोंकना था। उन्होंने लेखिका मन्नू को निर्देश दिया कि वे घर में होने वाली राजनैतिक पार्टियों के जमावड़े में होने वाली चर्चाओं को बैठकर सुनें और जानें कि देश में चारों ओर क्या कुछ हो रहा है।

(ख) 'लखनवी अंदाज़' पाठ के लेखक ने सेकंड क्लास का टिकट इसलिए खरीदा क्योंकि वे भीड़ से बचना चाहते थे। दूर तो जाना नहीं था, इसलिए उन्होंने अधिक दाम देकर सेकंड क्लास का टिकट खरीदा। आराम से एकांत में बैठकर, खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देखते हुए वे अपनी नई कहानी के बारे में सोचना चाहते थे।

(ग) लेखक ने बालगोबिन भगत के संगीत को जादू इसलिए कहा है क्योंकि खँजड़ी लेकर गीत गाते हुए उनके मधुर स्वर को सुनकर समूचे गाँव में एक स्वर-तरंग की झंकार-सी उठती थी। खेलते हुए बच्चे झूम उठते थे, मेंड पर खड़ी औरतों के होंठ हिलने लगते थे, वे उसके साथ गुनगुनाने लगती थीं। हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते और रोपनी करने वालों की अँगुलियाँ अजीब क्रम से चलने लगती थीं। उनके संगीत का एक-एक स्वर गाँव वालों को जादू के समान मंत्रमुग्ध कर देता था।

(घ) कैप्टन (चश्मेवाला) नेताजी की संगमरमर की सुंदर मूर्ति चश्मे के बिना अच्छी नहीं लगती थी। वह अपने पास रखे हुए गिने-चुने फ्रेमों में से एक फ्रेम प्रतिदिन नेता जी की मूर्ति को पहना देता था। जब किसी ग्राहक को वैसा ही फ्रेम लेना होता, जैसा मूर्ति पर लगा हुआ रहता, तब कैप्टन मूर्ति पर लगा फ्रेम उतार कर ग्राहक को दे देता था और मूर्ति को दूसरा फ्रेम पहना देता था। इसलिए कैप्टन को मूर्ति का चश्मा बार-बार बदलना पड़ता था।

कैप्टन को लगता था कि बार-बार फ्रेम बदलने के कारण नेता जी को कष्ट होता है, इसलिए वह एक फ्रेम उतार कर दूसरा फ्रेम पहनाते हुए उनसे क्षमा माँग लेता था।

9. (क) लक्ष्मण ने रघुकुल की परंपरा के विषय में बताते हुए कहा कि देवता, ब्राह्मण, भगवान के भक्त और गाय इन सभी पर रघुकुल के व्यक्ति अपनी वीरता का प्रदर्शन नहीं करते हैं। रघुकुल के वीर इनका अपमान नहीं करते हैं।

(ख) लक्ष्मण ने व्यंग्य करते हुए परशुराम से कहा—आपका एक वचन ही करोड़ों वज्रों के समान कठोर है। आपने व्यर्थ ही फरसा और धनुष-बाण धारण किया है। आपके इस रूप को देखकर यदि कुछ गलत कह दिया हो तो धैर्यवान महामुनि! मुझे क्षमा कर दीजिएगा।

(ग) कुम्हड़बतिया काशीफल/सीताफल के बहुत छोटे से प्रारंभिक स्वरूप को कहते हैं। इस शब्द का प्रयोग करके लक्ष्मण क्रोधित परशुराम को यह बताना चाहते हैं कि वे उन्हें कुम्हड़े के छोटे फल के समान न समझें, जो तर्जनी उँगली के समान फरसा दिखाने से मुरझा जाएँगे।

10. (क) 'हारिल की लकड़ी' गोपियों ने श्रीकृष्ण को कहा है। जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने पैरों में पकड़ी हुई लकड़ी को कभी नहीं छोड़ता है, उसी प्रकार गोपियों ने भी मन, वचन और कर्म से श्रीकृष्ण को अपने हृदय में बसा लिया है। उद्धव द्वारा ज्ञान का उपदेश दिए जाने पर भी गोपियाँ श्रीकृष्ण को अपने मन से एक पल के लिए दूर नहीं करती हैं।

(ख) देव कवि ने वसंत को कामदेव का बालक इसलिए कहा है क्योंकि यह (ऋतु) बहुत सुंदर है। इस बालक को लगाने के लिए सवेरा रोज़ गुलाब रूपी चुटकी दिया करता है अर्थात वसंत के जागने (ऋतु के आगमन) के साथ पेड़ों की डालें झूमने लगती हैं, फूल खिल उठते हैं, समस्त वातावरण सुगंधित हो जाता है। मोर, तोता और कोयल मधुर स्वर में गाते हुए इस बालक वसंत का अभिनंदन करते हैं।

(ग) 'आत्मकथ्य' कविता में कवि ने स्पष्ट किया है कि संवेदनहीन लोग दूसरों के दुखों का मज़ाक उड़ाते हैं। कवि का जीवन भी अनगिनत दुखों से भरा है। कवि उन लोगों से बचना चाहते हैं जो दूसरों के दुखों को देखकर सुखी होते हैं, दुखियों के दुख का मज़ाक उड़ाते हैं। दूसरा कारण यह है कि आत्मकथा लिखने से विश्वासघाती मित्रों की कलई खुल जाएगी। कवि अपनी प्रेयसी के साथ बिताए गए मधुर पलों की पूँजी को सार्वजनिक हाथों में सौंपना नहीं चाहते। उनका जीवन सामान्य व्यक्ति के जीवन के समान है, जिससे किसी को कोई प्रेरणा मिले, ऐसी उन्हें आशा नहीं है। अंतिम कारण यह है कि कवि की व्यथा, दुख-दर्द थककर सो चुकी हैं। आत्मकथा लिखकर कवि उन्हें कुरेदना नहीं चाहते, फिर से जगाना नहीं चाहते।

(घ) 'अट नहीं रही है' कविता में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने फागुन मास के मादक सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहा है कि सौंदर्य सर्वत्र बिखरा पड़ा है। मंद-सुगंध से परिपूर्ण रंग-बिरंगे फूल-पत्तों से डालियाँ इस तरह सज गई हैं मानो वे फागुन के तन में समा नहीं पा रही हैं और आकाश से धरती तक बिखरी हुई हैं।

11. हिमालय के पल-पल परिवर्तित होते रूप को देखकर लेखिका की आँखें तृप्त और आत्मा भाव-विभोर हो उठी। कहीं चटक हरे रंग का मोटा कालीन ओढ़े, तो कहीं हल्का पीलापन लिए, तो कहीं पलस्तर उखड़ी दीवार की तरह पथरीले परिदृश्य ने लेखिका के दिलो-दिमाग पर जादू की छड़ी घुमा दी। वे 'माया' और छाया के खेल को देखते हुए अनुभव करती हैं कि प्रकृति उन्हें समझदार बनाने के लिए अनगिनत रहस्यों का उद्घाटन कर रही है। उन्हें अनुभव होता है कि झरनों के सतत प्रवाह में, घाटियों-वादियों के नज़ारों में, फूलों की सुगंध और सुंदरता में स्वयं को विलीन कर देने में ही जीवन की सार्थकता निहित है।

आज की पीढ़ी वृक्षों की अंधाधुंध कटाई करते हुए जीव-जंतुओं, पशु-पक्षियों की प्रजातियों को विलुप्त होने के कगार पर पहुँचा कर अपनी स्वार्थपरता का परिचय दे रही है। मनुष्य ने नदियों के जल को प्रदूषित कर पानी का गलत प्रयोग किया, जिससे कई स्थानों पर पानी की कमी तथा जल-जीवों का ह्रास हुआ। पेयजल का संकट बढ़ गया। मनुष्यों ने अधिक-से-अधिक धन कमाने की लालसा में पहाड़ों को पर्यटन स्थल बना दिया, जिससे वहाँ भी प्रदूषण फैल रहा है, समय पर बर्फ़ नहीं गिरती है, तापक्रम बढ़ता जा रहा है। झरनों के जल को एकत्रित कर टूरिस्ट स्पॉट बनाए हैं, जिससे प्रदूषण में वृद्धि हो रही है।

प्रकृति के साथ किए जाने वाले इस खिलवाड़ को रोकने के लिए हम सभी पेड़ लगाएँ, उनकी देखभाल करें, पशु-पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों को लुप्त होने से बचाएँ। नदियों में कूड़ा-करकट न डालें, पर्यटक स्थलों की संख्या अधिक न बढ़ाएँ। इस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के साथ-साथ हम उनकी सुरक्षा भी करें।

अथवा

दुलारी द्वारा लोक भाषा में गाए गए गीत के इस मुखड़े का सामान्य अर्थ है—''इसी स्थान पर मेरी नाक की लौंग (सुहाग का प्रतीक) खो गई है।'' परंतु प्रतीकार्थ बड़ा ही गंभीर और मार्मिक है। गौनहारिन दुलारी ने मन-ही-मन टुन्नू के नाम की लौंग पहन ली थी। सोलह सत्रह वर्ष के टुन्नू की कला को पहचानकर उसका सम्मान करने लगी थी। यही सम्मान की भावना प्रेम के रूप में बदल गई।

जिस स्थान पर दुलारी अली सगीर की फ़रमाइश पर गीत गा रही थी, वहीं टुन्नू की हत्या की गई थी। अतः प्रतीकार्थ है—यह वही स्थान था, जहाँ दुलारी का सुहाग बिखर गया था।

टुन्नू दुलारी का केवल प्रशंसक ही नहीं, मन ही मन उससे प्रेम करने लगा था। होली के त्योहार पर वह दुलारी के लिए सूत से बनी हुई धोती लेकर आया था परंतु दुलारी ने मन-ही-मन सामाजिक मान-मर्यादा के विषय में सोचते हुए उपेक्षापूर्वक धोती टुन्नू के पैरों के पास फेंक ही। ''तुम मेरे मालिक हो या बेटे हो या भाई हो, कौन हो? खैरियत चाहते हो अपना यह कफ़न लेकर यहाँ से सीधे चले जाओ।'' जैसे कठोर शब्दों से अपमानित करते हुए उसे घर से निकाल दिया। दुलारी का यह क्रोध केवल दिखावा मात्र था क्योंकि वह टुन्नू को पथभ्रष्ट नहीं करना चाहती थी। वह इस सत्य का अनुभव कर चुकी थी कि उसके मन में टुन्नू का आसन दृढ़ता से स्थापित हो चुका है। इसलिए उसे इस कच्ची उम्र में प्यार के चक्कर में नहीं फँसना चाहिए। उसे अपने गरीब पुरोहित पिता का घर चलाने में हाथ बँटाना चाहिए, न कि प्यार के चक्कर में गाने-बजाने में अपना समय नष्ट करना चाहिए। दुलारी स्वार्थी नहीं थी। वह टुन्नू को सपनों की दुनिया से निकालकर यथार्थ के कठोर धरातल पर लाना चाहती थी। इसलिए उसे चोट पहुँचाकर सही दिशा दिखाना दुलारी ने ज़रूरी समझा, हालाँकि इसका उसे पश्चाताप भी था।

खंड–घ

12. (क) **यदि मैं शिक्षामंत्री होता!**

शिक्षा ज्ञान का वह आलोक है, जिससे व्यक्ति का पूर्णरूप से विकास होता है। शिक्षा शब्द अपने आप में बहुत व्यापक है। पुस्तकीय शिक्षा, नैतिक शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा के साथ समुचित सामाजिक शिक्षा व्यक्ति को संपूर्णता प्रदान करती है। महात्मा गांधी ने कहा था—''शिक्षा से मेरा अभिप्राय है बच्चे की संपूर्ण शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का सर्वांगीण विकास'', परंतु दुर्भाग्य से आज़ादी के सत्तर सालों के बाद भी भारत में, शिक्षा के स्तर में कमी नज़र आती है। शिक्षा के क्षेत्र में विद्‌मान कमी मुझे शिक्षा मंत्री बनने के अनगिनत सपने दिखा रही है।

अतीतकाल से ही शिक्षा की पद्‌धति और पाठ्‌यक्रम में अपने-अपने युग की आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तन दिखाई देते हैं। वैदिक युग की शिक्षा पद्‌धति और मुगल काल की शिक्षा पद्‌धति में ज़मीन-आसमान का अंतर था। मैं वर्तमान शिक्षा पद्‌धति में वर्तमान जीवन के मद्‌देनज़र अनगिनत परिवर्तन लाने का इच्छुक हूँ।

यदि भविष्य में मेरी कल्पना सार्थक हो जाए और मैं शिक्षा मंत्री बन जाऊँ, तो पूरी शिक्षा-व्यवस्था को बदल कर देश को आज की परिस्थिति के अनुरूप बना दूँगा। विश्व के अन्य देश प्रगति के चरम शिखर पर आसीन हैं। मैं भी अपने देश के होनहार बच्चों को उन्नति के उसी उच्च शिखर पर ले जाऊँगा। सड़कों पर आवारा बेरोज़गारों की भीड़ नहीं दिखाई देगी। अश्लीलता और आतंक का सफ़ाया हो जाएगा। हर एक हाथ अपने हुनर का सही इस्तेमाल करते हुए स्वावलंबी जीवन व्यतीत करेगा। निराशा के काले घने बादल छँट जाएँगे।

शिक्षा से जीवन और आर्थिक स्थिति सुधर जाने पर भ्रष्टाचार का नामोनिशान मिट जाएगा। पुस्तकीय ज्ञान के साथ प्रयोग और परीक्षण करते हुए देश के बच्चे व्यावहारिक कुशलता और हस्त कौशल के महत्त्व को समझेंगे। तकनीकी ज्ञान, साहित्यिक ज्ञान और व्यक्तिगत रुचि के अनुसार शिक्षा देने की व्यवस्था करूँगा। विद्‌यालय और शिक्षक राष्ट्र-निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देंगे।

मैं पाठ्‌यक्रम में भारतीय संस्कृति, प्रांतीय भाषाओं—संस्कृत और हिंदी को प्राथमिकता दूँगा। भारतीय वेशभूषा, परंपरा, खानपान, सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक शिक्षा की व्यवस्था करूँगा।

अंततः मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि मेरी शिक्षामंत्री बनने की मनोकामना पूरी हो, जिससे अनंत काल से प्रसिद्‌ध भारत पुनः विश्वगुरु के पद पर प्रतिष्ठित हो सके।

(ख) **व्यायाम के लाभ**

कहा जाता है कि स्वास्थ्य वह संपदा है जिसके द्वारा मनुष्य चारों पुरुषार्थ–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति करता है। मानव मन को प्रसन्न और तन को स्फूर्तिमय, गतिशील बनाए रखने के लिए व्यायाम अनिवार्य है। प्रतिदिन नियमपूर्वक व्यायाम करने से शरीर स्वस्थ, मांसपेशियाँ मज़बूत, मन तथा बुद्धि जागरूक और प्रसन्न रहते हैं।

व्यायाम कई प्रकार से किया जा सकता है। क्रिकेट खेलना, फ़ुटबॉल खेलना, कबड्डी खेलना, तैरना, दौड़ना, दंड-बैठक लगाना मुगदर घुमाना, वजन उठाना, योगासन करना आदि व्यायाम के निर्धारित रूप हैं। ये सभी प्रकार के व्यायाम शारीरिक बल तथा स्फूर्ति को बढ़ाते हैं। इससे शरीर में शुद्ध रक्त का संचार होता है, जो बुद्धि और मन को भी पुष्ट करता है। योगाभ्यास, चिंतन-मनन और शतरंज का खेल बौद्धिक योग्यताओं को विकसित करता है।

व्यायाम करने की मात्रा व्यक्ति विशेष पर निर्भर करती है। लिंग, आयु, शक्ति आदि के अनुसार व्यायाम की मात्रा में अंतर आता है। व्यायाम प्रतिदिन निर्धारित समय पर शुद्ध हवा में करना चाहिए। शारीरिक व्यायाम की मात्रा को धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए। व्यायाम करने के लिए प्रातःकाल का समय उपयुक्त समझा जाता है।

व्यायाम न करने से शरीर में विभिन्न रोग घर कर जाते हैं। आज के युग में जो भयानक रोग फैल रहे हैं, उनका एक प्रमुख कारण है– जीवन शैली में बदलाव आना और नियमित व्यायाम न करना। व्यायाम न करने से मोटापा, रक्तचाप, मधुमेह, साँस संबंधी बीमारी हो जाती है। व्यक्ति अपने लिए रोग, बुढ़ापा और मृत्यु के दरवाज़े स्वयं खोल देता है।

अतः अच्छा स्वास्थ्य केवल अच्छे भोजन से ही नहीं मिलता है, उसके लिए नियमित व्यायाम भी आवश्यक है। शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही सभी कार्य सुगमतापूर्वक कर सकता है और परिवार, समाज तथा राष्ट्र के प्रति अपना दायित्व निभा सकता है।

(ग) **वन-संपदा और उसका संरक्षण**

ग्लोबल वार्मिंग के इस दहशत भरे वातावरण में वनों का महत्त्व तो और भी अधिक बढ़ गया है। वन केवल धरती के शृंगार ही नहीं, वर्तमान संस्कृति और सभ्यता के पोषक, प्राणी जगत को शुद्ध श्वास-वायु प्रदान कर जीवित रखने का एकमात्र साधन भी हैं। अतः वनों का मानव जीवन के साथ बड़ा गहरा संबंध है। इनका संरक्षण करना अपरिहार्य है।

इनका प्रभाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मानव जीवन पर पड़ता है। मानव-जीवन के लिए अपरिहार्य होने के अतिरिक्त, शहरों की भीड़-भाड़ से भरी ज़िंदगी में कुछ पल एकांत का आनंद लेने के लिए पर्वतीय स्थानों के वनों में लोग ट्रेकिंग करने, भ्रमण करने, पिकनिक मनाने जाते हैं। असम, उत्तराखंड और कश्मीर की वादियों में हरे-भरे पेड़ों के साथ समय बिताने में बड़ा आनंद आता है। अप्रत्यक्ष रूप से वन ही बादलों को खींचते हैं। वनों से वातावरण में नमी, तापक्रम और वायु-प्रवाह भी नियंत्रित रहता है। वृक्ष ही वर्षा के जल को सोखकर भूमिगत जल-स्तर को बढ़ाते हैं। वनों के कारण नदियों का प्रवाह धीमा पड़ता है, जिससे भूमि-क्षरण की समस्या कम होती है।

आज के इस भौतिकवादी दौर में वनों के सम्मुख अनगिनत समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं। बढ़ती हुई आबादी की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वनों को अंधाधुंध काटा जा रहा हैं। व्यापारिक दृष्टि से उपयोगी साल, सागौन, चीड़, देवदार, शीशम, चंदन आदि की लकड़ी का व्यापार किया जा रहा है। परिणामस्वरूप अनेक घने वन आज समाप्त हो गए हैं। घर और सड़कें बनाने के लिए भी वनों का सफाया किया जा रहा है।

आज सरकार और व्यक्ति के सामने वन संरक्षण की समस्या आ खड़ी हुई है। यदि आज भी जंगल न लगाए गए, तो भविष्य में ईंधन, इमारती लकड़ी, फर्नीचर बनाने के लिए लकड़ी और जीवन जीने के लिए स्वच्छ वायु नहीं मिलेगी। सरकार ने समय-समय पर वनों के संरक्षण और विकास के लिए अनेक कदम उठाए, वर्ष 1956 में वन महोत्सव को राष्ट्रीय कार्यक्रम घोषित किया। सारे देश में वन लगाने तथा उसकी सुरक्षा करने का संकल्प लिया गया। देहरादून में वन अनुसंधान की स्थापना की गई। वर्ष 1965 में केंद्रीय वन आयोग का गठन किया गया। सार रूप में यही कहना उचित है कि इस उपयोगी प्राकृतिक संसाधन का संरक्षण करके ही हम पृथ्वी पर मानव जीवन को स्वस्थ एवं सुरक्षित बना सकते हैं।

13. 23, निराला नगर

कृष्णाधाम

लखनऊ

दिनांक : 20/03/2017

प्रिय सखी सारिका,

सप्रेम नमस्ते।

अभी-अभी मुझे तुम्हारी बड़ी बहन ने बताया कि बोर्ड परीक्षा आरंभ होने से पहले ही तुम बीमार पड़ गईं और कमज़ोरी बहुत अधिक बढ़ जाने के कारण परीक्षा नहीं दे पाईं। सखी! इसमें निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं है। विधि के विधान को भला कौन टाल सकता है। तुम अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना। फल-दूध और हरी सब्ज़ियों का सेवन करना, जल्दी ही स्वस्थ हो जाओगी। मुझे पूरा विश्वास है कि अगले वर्ष तुम और भी अधिक परिश्रमपूर्वक अध्ययन करोगी और परीक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त करोगी। इस एक वर्ष के नुकसान से सजग होकर तुम भविष्य में अत्यधिक सावधान रहोगी, नियमित रूप से व्यायाम करोगी, खान-पान का ध्यान रखोगी। गर्मी की छुट्टियों में मैं तुमसे मिलने आऊँगी।

चाचाजी, चाचीजी से मेरा सादर चरण-स्पर्श कहना। बड़ी बहन को मेरा नमस्कार। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में।

तुम्हारी सखी

क०ख०ग०

अथवा

सेवा में

श्रीमान मुख्य अध्यापक जी

दिल्ली पब्लिक स्कूल

राजा गार्डन, नई दिल्ली

दिनांक : 10/10/2017

विषय : पड़ोसी विद्यालय मॉर्डन स्कूल के साथ फुटबॉल-मैच खेलने की अनुमति देने हेतु प्रार्थना पत्र

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि हमारे विद्यालय की फुटबॉल टीम के खिलाड़ी पड़ोसी विद्यालय मॉडर्न स्कूल की फुटबॉल टीम के साथ मैच खेलना चाहते हैं। मॉडर्न स्कूल के प्रधानाचार्य महोदय ने वहाँ की फुटबॉल टीम को मैच खेलने की अनुमति दे दी है। इस मैच का आयोजन अपने विद्यालय में करने के लिए हमें आपकी अनुमति चाहिए। हमारा अनुरोध है कि कृपया हमें 14 नवंबर 'बाल-दिवस' के अवसर पर प्रातः 11 बजे मॉडर्न स्कूल के साथ मैच खेलने की अनुमति प्रदान करें। हमारे विद्यालय में इस मैच का आयोजन किए जाने से, विद्यालय के सभी छात्र इसका आनंद उठा सकेंगे।

आपकी स्वीकृति की प्रतीक्षा में।

धन्यवाद सहित।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

क०ख०ग०

कक्षा नौवीं 'अ'

14.

चमको वाशिंग सोप

सफ़ेद कपड़ों की चमचमाती सफ़ेदी के लिए
चमको वाशिंग सोप/पाउडर/लिक्विड
हमेशा इस्तेमाल करें।

मूल्य है कम
दाग़ छुड़ाए एकदम!

ऑफ़र— अब ₹ *10/-*
के छोटे पैक में भी
उपलब्ध

हाथों का ध्यान रखे, वस्त्रों का मित्र,
कड़ी सफाई बड़ी आसानी से,
धुले वस्त्रों पर जैसे छिड़के इत्र!
सभी दुकानों में उपलब्ध

कपड़ों का दोस्त
मैल का दुश्मन

निर्माता–हंसा उद्योग, साबेरी, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

अथवा

बैग-ही-बैग

रंगीन, सुंदर बैग,
टिकाऊ, दमदार, फ़ैशनेबल बैग,
छोटे बैग, बड़े बैग,
बच्चों के स्कूल बैग,
महिलाओं के शृंगार बैग।

विशेष आकर्षण–दो के साथ एक बैग फ्री
मूल्य — ₹ 200/-, ₹ 300/- ₹ 500/-

संपर्वक–मधुबन सिनेमा के पास 'रजत स्टोर', चाँदनी चौक, नई दिल्ली 110002, दूरभाष–4370xxxx, 4370xxxx